Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

पर्यावरण चेतना विकास की आवश्यकता का अध्ययन

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

पर्यावरण चतना विकास की आवश्यकता का अध्ययन

Yuti Patel[1] Abhishekh Choubey[2]

[1]Research Scholar, CMJ University, Shillong, Meghalaya, India

[2]Research Scholar, CMJ University, Shillong, Meghalaya, India

लेखसार – ईश्वर ने पृथ्वी पर असीमित मात्राा में नैसर्गिक खूबसूरती व साध्न प्रदान किये हैं। परमात्मा ने हमें, हमारी सुविधओं के लिए वो सारी चीजें दी हैं, जो एक मनुष्य को मिलना चाहिए। उन्होंने हमें पेड़, पहाड़ और पानी के श्रोत दिये हैं। जंगल व उसमें तरह–तरह के जानवर, पेड़ व तरह–तरह के पफल, जल–श्रोत के रूप में नदी जलाशय व समुद्र तथा सुन्दर जलीय जीव, पहाड की छटा, आदि। असीमित मात्राा में असंख्य आशीर्वाद हमें इन चीजों के रूप में परमात्मा ने निःशुल्क दिये हैं, प्रकृति के संपूर्ण साध्नों का विधन हमें नैसर्गिक व शर्तहीन रूप से प्राप्त है। परमात्मा ने इसके लिए हमसे कोई शुल्क कभी नहीं लिया है, पर हमारी लालच के प्रभाव ने सब कुछ तहस–नहस कर दिया है।

मुख्य शब्द – वैश्विक चेतना, अप्रत्यक्ष प्रदुषण, साईबर प्रदुषण, मनोमानसिक किया . प्रतिकिया, वेव प्रदुषण, सार्वभौमिक चेतना, मास लेवल;डैं समअमसद्धए हरित चेतना।

----------♦----------

विषय बिंदु

प्रकृति प्रदत्त संपूर्ण संसाध्नों के प्रति हमारा रवैया चेतनापूर्ण होना चाहिए, जबकि हम लालच से भरे पड़े हैं। ईश्वर ने हमें जितने भी संसाध्न उपहारस्वरूप जीवन जीने के लिये प्रदत्त किये हैं, कापफी हैं, परंतु हमारे लालच के सामने ये संसाध्न बौने पड़ जाते हैं, इस संबंध में महात्मा गांधी का एक कथन कापफी प्रासंगिक है–फ्पृथ्वी पर जितने संसाध्न हैं, मानव जीवन के लिए कापफी हैं। पर मानव लोभ के लिए नहीं। पृथ्वी के संसाध्न सारे व्यक्तियों का जीवन यापन करा सकती है, लेकिन एक व्यक्ति के भी लालच को पूरा नहीं कर सकती है।य गांधि जी ने भी यहां यही व्यक्त किया है कि प्रकृति व्यक्तियों के लालच को नहीं पूरा कर सकती है। प्रकृति के प्रति, जब हमारा नजरिया लालचपूर्ण रहेगा, तो सिर्पफ विध्वंश होगा और अंततोगत्वा हाहाकार ही मचेगा। प्रकृति के संपूर्ण संसाध्न एक व्यक्ति के लालच को भी पूरा नहीं कर सकती अर्थात, संपूर्ण पृथ्वी का संसाध्न एक व्यक्ति के लालच के सामने बौना पड़ जाये।

पृष्टभूमि

विकास के नाम पर हमने प्रकृति के संसाध्नों का जिस प्रकार से अंधुंध दोहन किया है व पृथ्वी तथा पर्यावरण को प्रदुषित किया हैऋ वह दिन दूर नहीं, जब पृथ्वी पर हमारा जीवन दुभर हो जायेगा। इसकी शुरूआत तो आंधी, तूपफान, बाढ़, चकबात, भूकंप, सूनामी, भीषण गर्मी, अत्यध्कि बर्पफबारी, आदि के रूप में हो ही चुकी है। लेकिन,यह सिर्पफ शुरूआत है, इस शुरूआती दौर में ही हम इतने ज्यादा तबाह किये जा रहे हैं, तो बाद में क्या होगा, मानवीय परिकल्पनाओं से परे है।

हमने तथाकथित विकास के नाम पर जो गंदा खेल खेला है, प्रकृति इसे कभी मापफ नहीं करेगी। प्रकृति ने जिस कृपाभाव से हमें सारी की सारी प्राकृतिक संपदायें प्रदान की हैऋ प्रकृति के प्रति हमारा भी कुछ कर्तव्य है, जिसे अब हर हालत में निभाना जरूरी हो गया है। हमने अगर अब भी अपनी कृतघ्नता जारी रखी तो हम प्रकृति के कोप को झेल नहीं पायेंगे और हमें प्रकृति का कोपभाजन बनना पड़ेगा। प्रकृति ने हमारे असंख्य गुनाहों को मापफ किया है, वस्तुतः अब जो ज्यादती हम कर रहे हैं वह क्षमा योग्य नहीं है। शास्त्राों में कालिदास के सम्बन्ध में एक किवदन्ती है कि कालिदास इतने मूर्ख थे कि वे जिस डाली पर बैठे होते थे, उसी को काटने लगते थे। अर्थात् उन्हें यह भी होश नहीं रहता था कि काटने पर डाली टूटेगी साथ ही साथ वे भी गिर जायेंगे और मरेंगे।

आज तो सारा संसार ही कालिदास के समान कार्य कर रहा है। हम जिस पृथ्वी पर रह रहे हैं, जिस पृथ्वी ने हमें इतनी सुविधयें दी है, उसी को हम तबाह करने में जुटे हुए हैं। शायद हम ये भूल रहे हैं कि हमारी इन करतूतों से पृथ्वी का कुछ नही बिगड़ेगा, हमारा सत्यानाश अवश्यम्भावी है। पृथ्वी का अस्तित्व तो शाश्वत् है, पृथ्वी का कुछ भी बुरा नहीं होगा, हमारा अवश्य ही मिट जायेगा। अगर हम ऐसा चाहते हैं कि हमारा सब कुछ बच जाए, हमें पृथ्वी को बचाना होगा, नहीं तो हमें प्रायश्चित का भी मौका प्रकृति प्रदान नहीं करेगी।

शोध तथ्य

लोभ व लालच के जिस मुकाम पर हम पहुँच चुके हैं, हमें वापस लौटने का कोई रास्ता ही नहीं बचा। हॉ, अभी भी हम जहाँ हैं, वहॉ रूक जायें तो कम से कम विनाश से तो बच जायेंगे। लेकिन, इस पड़ाव के लिये हमें एक वैश्विक पर्यावरण चेतना का विकाश करना होगा। अब पृथ्वी को बचाने के लिये चेतना विकाश ही काम कर सकता है, अन्य उपाय सर्वथा बेकार हैं। पर्यावरण सुरक्षा के लिए वैश्विक स्तर पर कापफी राजनैतिक, कूटनैतिक प्रयास किये गये हैं, लेकिन सारे के सारे प्रयास लगभग–लगभग व्यर्थ ही सिद्व हुये हैं। इन प्रयासों का सार्थक पफल न के बराबर ही सामने आया है। अब आवश्यकता है एक सम्पूर्ण चेतना विकाश की, जहाँ भावनात्मक व आत्मिक स्तर पर लोगों को यह संदेश दिया जाये कि अगर हमें खुद को बचाना है, तो पृथ्वी और पर्यावरण को बचाना होगा। हमें यह संदेश

www.ignited.in

पफैलाना होगा कि पृथ्वी और पर्यावरण बचेगा तो ही हमारा अस्तित्व बच पायेगा।

वर्तमान पर्यावरण व हमारा स्वास्थ्य

इस विषय पर हम जितनी ज़्यादा चर्चा करें, कम ही होगा। प्रदुषित पर्यावरण ने सबसे ज्यादा हमारे स्वास्थ्य पर गलत असर डाला है, पूरे विश्व में शायद ही कोई व्यक्ति मिलेगा, जो प्रदुषण से परेशान न हो या पर्यावरण प्रदुषण ने उसके स्वास्थ्य पर बुरा असर न डाला हो। पूरे विश्व में आज 20 प्रतिशत से भी ज्यादा लोग सांस की बिमारी से पीड़ित हैं, जिनमें 2 प्रतिशत तो दमा से पीड़ित हैं। प्रदुषित पर्यावरण ने हमारे त्वचा, आंख, मानसिक स्वास्थ्य व हडिडयों को भी बुरी तरह से प्रभावित किया है। पूरे विश्व में 90 प्रतिशत लोग किसी न किसी प्रकार की एलर्जी से पीडित हैं और कुछ लोग तो खतरनाक एलर्जी से ग्रस्त हैं। स्वास्थ्य विज्ञान में अब तक हजार किस्म से भी ज़्यादा एलर्जी के प्रकार ढूंढ़ निकाला है, और इन तमाम विषमताओं के पीछे पर्यावरण प्रदुषण का हाथ है। ये पर्यावरण प्रदुषण हमारा ही कृत्य है। पर्यावरण ने खुद को स्वयं ही तो प्रदुषित नहीं कर लिया। हमने हमारी ही लालच में पर्यावरण को सत्यानाश कर डाला है। और इसका अंजाम स्वास्थ्य समस्याओं और चुनौतियों के रूप में झेलना पड़ रहा है। हमारा संपूर्ण समुदाय इनसे प्रभावित हुआ है। **वयस्क,** वृद्व, बच्चे सभी प्रदुषण से बुरी तरह त्रास्त हैं। अगर देखा जाये तो प्रत्यक्ष प्रदुषण के अलावा हजारों तरह का अप्रत्यक्ष प्रदुषण भी हमें मारने पर तुल गया है, और इन प्रदुषण के पीछे भी हम ही जिम्मेदार हैं। अप्रत्यक्ष प्रदुषण के उदाहरण हैं– ध्रुम्रपान, घरों के कमरों में .हवा के आर–पार न गुजरने के कारण कार्वन–डाई–ऑक्साइड का उत्सर्जन, बंद किचेन में खाना पकने से छौंक द्वारा प्रदुषण, आदि। अब तक हमारा ध्यान सिर्पफ प्रत्यक्ष प्रदुषण के कारकों, जैसे–गाड़ियों का ध्ुंआ, औद्योगिक प्रदुषण, रासायनिक प्रदुषण, आदि पर ही था। जबकि, सच्चाई तो यह है कि अप्रत्यक्ष प्रदुषण के कारकों का हम पर ज्यादा गहरा व खतरनाक प्रभाव है। वैज्ञानिकों का कहना है कि ध्रुम्रपान करने पर किसी दूसरे के द्वारा छोडा गया ध्ुँआ, जब कोई दुसरा व्यक्ति अपने सांसो द्वारा अवशोषित करता है तो दुसरे व्यक्ति पर उसका कुप्रभाव प्रत्यक्ष ध्रुम्रपान करने वाले से भी ज़्यादा होता है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि प्रदुषण का कुप्रभाव हमारे जीवन को कितने घातक तरीके से कुप्रभावित करता है।

पर्यावरण प्रदुषण व हमारा परिवेश :

प्रदुषित परिवेश में हमारी सारी व्यवस्था असंतुलित हो गई है। प्रदुषण ने पारिस्थिकी को भी बुरी तरह से प्रभावित किया है। कई प्रकार के जीव जन्तुओं और वनस्पतियों का विलुप्त होना, इस ओर संकेत देता है कि समस्या बड़ी भयावह है। अदृश्य कारकों द्वारा जो प्रदुषण पैफल रहा है वह भी कम खतरनाक नहीं है। सेल्युलर टावर ने भी कापफी साईवर प्रदुषण पैफलाया है, जो सिर्पफ जीव–जन्तुओं के लिए ही नहीं, अपितु मानव के लिए भी कापफी हानिप्रद है। मोबाइल पफोन द्वारा पैफलाये जाने वाले वेव प्रदुषण ;अम व्सससनजपवदद्ध ने मनुष्य के अन्दर दिल की बिमारी के साथ–साथ वीर्याणुओं को भी मारने;ेतवउवेवउम ्रापससमतद्ध का काम कर रहा है। मोबाइल टावर द्वारा पक्षियों का व्यवहार भी कापफी प्रभावित हुआ है। पक्षियों में व्याप्त चहचहाहट भी कापफी नगण्य हो गई है, अब तो पक्षी भी मौन रहने लगे हैं। मानव के जीवनी–शक्ति;जंउपदंद्ध को इस वेव प्रदुषण ने कापफी कुप्रभावित किया है। मनुष्य के मनोमानसिक क्रिया–प्रतिकिया में भी इसका गलत असर पड़ा है। इनके कुप्रभाव द्वारा आज आदमी चिड़चिड़ा हो चला है। प्रदुषण ने हमारे सम्पूर्ण परिवेश को कुप्रभावित किया है। हमारे सम्पूर्ण जीवन का शायद ही कोई भाग हो जो आज प्रदुषण द्वारा कुप्रभावित न हुआ हो।

प्रदुषण व हमारी भविष्य की पीढी:

बेपनाह पर्यावरण प्रदुषण ने एक घातक दुश्मन के रूप में हमारी भविष्य की पीढ़ी के लिए भी प्रश्नचिन्ह खड़ा कर दिया है। बच्चों का नाजुक शरीर और रक्षातन्त्रा इस पर्यावरण प्रदुषण को झेलने में असमर्थ साबित हो रहा है। आज बच्चों में तरह–तरह की बिमारियों का होना प्रदुषण की ही देन है। बिन बुलाये मेहमान की तरह यह हमारी पीढियों के स्वास्थ्य को तबाह करने पर तुला हुआ है। आज बच्चे पहले की अपेक्षा ज्यादा चिड़चिड़े व कमजोर हैं। उन्हें ठीक से ऑक्सीजन न मिलने के कारण साँस रोग के साथ ही साथ मष्तिष्क का रोग भी हो जाता है। शुद्व हवा के रूप में ऑक्सीजन की कम आपूर्ति होने के कारण उनका दिमाग ठीक से काम नहीं करता है। इस कारण से बच्चों को सीखने, खेलन और पढ़ने में अपने मष्तिष्क पर ज्यादा जोर देना पड़ता है और वे चिड़चिड़े तथा धीरे–धीरे मंद बुद्वि के हो जाते हैं।

पर्यावरण प्रदुषण ने हमारे भविष्य की पीढ़ी के लिये एक ऐसा प्रश्न खड़ा कर दिया है जिसका उत्तर ढूंढ़ने से भी हमें नही मिल पा रहा है। लेकिन, हमें इस प्रश्न का उत्तर ढूढना ही होगा। हमें विचार करना होगा कि हम विरासत स्वरूप अपनी पीढ़ी को क्या सौंपने जा रहे हैं। क्या हम अपनी अगली पीढ़ी को ऐसी सुरंग में ध्केल रहे हैं, जहाँ से चाहकर भी वे लौट नहीं पायेंगे। हमें बहुत ही चेतनापूर्ण तरीके से अपने प्राकृतिक विरासत के बारे में सोचना होगा।

शोधफल

पर्यावरण बचाव व संरक्षण के रूप में अब एक ही समाधन सामने दिख रहा है कि इस सम्बन्ध् में एक सार्वभौमिक, वैश्विक व सामूहिक चेतना का विकास किया जाए। बहुत ही बड़े ही स्तर पर एक अभियान चलाया जाए कि पर्यावरण है तो हम हैंद्ध वरना, हमारा कुछ भी नहीं बचेगा। इस सम्बन्ध में निम्नांकित शोध तथ्य कारगर सिद्व हो सकते हैं–

1. वैश्विक स्तर पर एक अभियान चलाया जाए जिसमें सारे वर्ग के लोगों को शामिल किया जाए। अमीर–गरीब, बुद्विजीवी, व्यावसायिक वर्ग, छात्रा, उद्योगपति सब लोग एक ही मंच से, एक साथ इस अभियान में शामिल हों।

2. पर्यावरण के दृश्य–अदृश्य सभी कारकों पर चर्चा व जनमत संग्रह हो। सबको पता चलना चाहिए कि पर्यावरण के कौन–कौन से कारक, किस प्रकार से पर्यावरण को प्रदुषित कर रहे हैं, उनका हमारे जीवन पर कैसा कुप्रभाव पड़ रहा है।

3. सारे वर्गों में उनकी मानसिक, आर्थिक व सामाजिक स्तर को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण चेतना तथा शिक्षा का विकास कराया जाए।

4. पर्यावरण के संबंध् में, फ्जान है तो जहान हैद्ध का संपूर्ण चेतनाबद्व नारा लोगों के दिलोदिमाग में बसाया जाए।

5. जरूरत पड़े तो मास लेवल पर मनोवैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग किया जाए।

6. एक ही साथ वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षिक ,व्यवसायिक, राजनैतिक, धर्मिक व अध्यात्मिक स्तर पर घनघोर प्रयास अभियान चलाया जाए। इसका परिणाम कापफी ध्नात्मक होगा।

7. छोटे–छोटे बच्चों को गंभीरता से प्रशिक्षित व चेतनावान बनाया जाए, इससे भविष्य का खतरा कम हो जाएगा।

8. प्रदुषण के जो प्रधन कारक हैं, उनके विरूद्व प्रेशर ग्रुप का गठन किया जाए। कई बार कई समस्याओं का समाधन प्रेशर ग्रुप द्वारा ही सम्भव हो पाता है। इस प्रकार जब एक समाधन आयेगा तो लोग इसे सकारात्मक दिशा में अग्रसर करेंगे।

9. औद्योगिक वर्ग, जो प्रदुषण के प्रमुख कारक हैं, उन्हें भी चेतना जागरण अभियान में शामिल किया जाए।

10. ग्रामीण क्षेत्राों में वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाया जाए। कृषकों को इस कार्य के लिये वित्त पोषित किया जाए। पफलदार वृक्ष भी लगाये जायें। इससे दोहरा पफायदा होगा। पफल और आय के आर्कषण के रूप में भी हरित चेतना का विकास सम्भव हो पायेगा।

निष्कर्ष

पर्यावरण प्रदुषण रूपी महासंकट से सिर्पफ चेतना ही हमें उबार सकता है। जब तक हर वर्ग और हर स्तर पर इस महायुद्व को सम्पन्न करने के लिए सामूहिक चेतना का विकास नहीं किया जायेगा, समस्या का कभी समाधन नहीं हो सकेगा। हमें यह खुद समझना होगा किफ्जान है तो जहान हैय् जान बचाने और जिंदा रहने के लिए प्रदुषण रहित व स्वस्थ पर्यावरण अत्यावश्यक है। इस तरह से पर्यावरण संरक्षण के संबंध् में एक सार्वजनिक चेतना का विकास करना होगा।